International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

# यशपाल के उपन्यास 'झूठा सच' में – विभाजन त्रासदी

अन्नु
शोधार्थी– पी.एच.डी. (हिन्दी विभाग)
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय

विभाजन से तात्पर्य है – टुकड़ों में बाँटना। भारत के इतिहास में विभाजन अभूतपूर्व घटना है। परन्तु आश्चर्य की बात है कि इस विभाजन की पृष्ठभूमि में न कोई प्राकृतिक प्रकोप था, न कोई भू–गर्भ की हलचल, जो स्थल को विभाजीत करती, न कोई बाहरी आक्रमण और न ही कोई गृहयुद्ध या पूंजी बाजार की अस्थिरता। प्रत्यक्ष रूप से यह करोड़ो मनुष्यों का संवैधानिक रूप से अपना प्रतिनिधित्व करने वाले नेताआं के माध्यम से स्वेच्छा से लिया गया निर्णय है। यह निर्णय देश के इतिहास और सभ्यता के सन्दर्भ में लगभग उतना ही महत्वपूर्ण है और उसी प्रकृति के काल को खण्डित करने वाला निर्णय था, जहां से सभ्यताएं और समाज या तो आत्महत्या की ओर मुड़ जाता या फिर धीरे – धीरे आत्मविनाश की ओर।

झूठा सच लिखने के पीछे पहला कारण था, यशपाल का अपने बालपन की भूमि लाहौर से प्रेम और विभाजन व समाज के विघटन की पीड़ा जो यशपाल ने बहुत गहराई से अनुभव की थी। 'झूठा सच' के बीच इस दौर में यशपाल के क्षुब्ध मन पर पड़े। कांग्रेस का वर्ग चरित्रा, नेताओं की समझौतेवादी सत्ताकांक्षी नीतियों और साम्प्रदायिक उन्मादों की आंधो जैसे अनेक मुद्दे, इस विभाजन की त्रासदी में गुंथे–बुने थे। दूसरा कारण था आम जनसमुदाय, जो सदा ही झूठ से ठगा गया है और दूसरी ओर झूठ का व्यवसाय करने वाले नेता हैं जिनके द्वारा झूठ से छली जाकर भी जनता सच के प्रति अपनी निष्ठा और उसकी ओर बढ़ने का साहस नहीं छोड़ती। वस्तुतः यशपाल ने उपन्यास का नामकरण भी इसी औचित्य को ध्यान में रखते हुए किया है।

बतौर यशपाल जी विभाजन की त्रासदी बाहरी वातावरण का ही विध्वंस नहीं करती, अपितु आन्तरिक मनोभावों को भी गहराई से उद्वेलित करती है। बाहरी विध्वंस का पुनःनिर्माण एक सीमा तक किया जा सकता है, परन्तु आन्तरिक विध्वंस हृदय में इस गहराई से छप जाती है कि उसको अन्त तक मिटाया नहीं जा सकता ऐसी ही छाप यशपाल जी के हृदय पर पड़ी 'लाहौर पहुंच कर हैरान। क्या यह वही लाहौर है, जिसे अन्तिम बार 1945 में दो दिन देखा था, और जिसकी रंगीनी, कल्पना में कायम थी। लगा मेले की जगह मरघट, उजाड़ रेलवे स्टेशन, शाहलमी दरवाजे का गुंजान तंग बाजार, परीमहल, मच्छी, हट्ठा, रंग–महल के बाजार– मोहल्ले जो विभाजन के दंगों में जला दिए थे सड़क के दोनो और मलबे के ढेरों का मैदान दिखाई दिया।

स्वाधीनता आंदोलन की पुरजोर कोशिशें जब भी हुई, ब्रिटिश सरकार ने उसे विफल कराने के लिए फूट डालने और विभाजन की प्रक्रिया को कायम रखा। 1857 का प्रथम स्वाधीनता संग्राम, बंग–भंग और 1906 में हुई मुस्लिम लीग की स्थापना इसी प्रकार की स्वाधीनता की तेजी को कम करने के लिए की गई। जयदेव पुरी, साहित्यिक अभिरूचि से परिपूर्ण, चेतनशील व्यक्ति इसलिए कम्यूनिस्टों के विरोध में है क्योंकि वे दो कौमों के सिद्वांत को स्वीकार करते है, जिसका मतलब है देश का विभाजन। ब्रिटिश सरकार किस प्रकार मुस्लिम लोग की पीठ थपथपा रही है। यह प. गिरधारी लाल के इस कथन से स्पष्ट है ''भई लीग तो एबसडी डिमांड करेगी ही एटली ने उन्हें बढ़ावा दिया है कि जिस तजबीज में लीग शामिल नहीं होगी, उसे ब्रिटिश सरकार मंजूर नहीं करेगी। जब आप डेमोक्रेसी की बात करते हैं तो लीग और कांग्रेस का क्या ख्याल? जो मैजारिटी मे हो उसकी बात मानिए।''

हिन्दू–मुस्लिम के विभाजन और सम्प्रदाय विशेष के प्रति अलगाव की आंधी का प्रथम दर्शन यशपाल जी ने उस समय किया जब हिन्दू रक्षा समिति को दो औरतें सहायतार्थ चंदा इकट्ठा करने भालो पंथी गली में पहुंचती है और मुसलमान फेरी वालों को देखकर, हिन्दुओं को उनके खिलाफ उकसाती है। ''आखिर हिन्दुओं के मोहल्ले में मुसलमान फेरी वालों का क्या काम है? इस

प्रकार साम्प्रदायिकता की भावना भालो पंथी की गली को कुछ अधिक ही हिंदू बना देती है।''

बतौर डा. प्राणनाथ इस विभाजन की त्रासदी का मूल कारण सरकारो नौकरियों को हिन्दू–मुसलमानों में साम्प्रदायिक अनुपात में बांटना, उनके चुनाव–प्रचार का क्षेत्र अलग–अलग बना देना है। हिन्दु समाज मुसलमानों के प्रति परस्पर भाईचारा, स्नेह, मिलाप जैसी भावनाओं को अपने अर्न्तमन में नहीं सहेजता। हिन्दु समाज की असहिष्णुता और मुसलमानों के प्रति उनकी घृणा इन साम्प्रदायिक दंगों का मूल कारण है। ''मुसलमानों को मलेच्छ और अछूत समझने के दिन से ही यह बीज बो दिया गया था। हिन्दु को आप अछूत बनाकर भी दबा सकते हैं क्योंकि वह आपसे धर्म से बंधा है। मुसमान तो उस धर्म से बंधा नहीं तो वह अछूत समझे जाने का अपमान क्यों बर्दाशत करें? जिस नियम को हमने अपनी सत्ता की रक्षा के लिए अपनाया था, उसी नियम ने हमें खा लिया।''

'झूठा सच' में यशपाल जी ने विभाजन की त्रासदी के लिए राजनीति व राजनेताओं की स्वार्थ लिप्सा को उत्तरदायी माना। जोकि जनता को महज एक सीढ़ी समझते हैं, अपनी मंजिल, अपने लक्ष्य का हासिल करने के लिए। ''तुम्हारे कत्ल के लिए उत्तेजना दिलाने की जिम्मेदारी उन नेताओं की है, जो तुम्हारे जैसे इंसानों को सिहांसन बनाने के लिए जनता को ईंट–गारे की भांति प्रयोग करनना चाहते हैं।'' परन्तु यहां पर यशपाल जी आम जनसमुदाय को चेतनशील और विवेकसम्पन्न बनने का आह्वान करते है और आम जनसमुदाय से प्रश्न करते हैं– क्या हम सर्वसाधारण स्वार्थों में अंध और क्रूर लोगों को सपनों के महल में पहुंचाने के लिए जीने बनते रहेंगे? क्या सर्व साधारण अपने नेताओं को मानवता की कसौटी पर जांचकर नहीं परखेंगे। क्या अपने स्वार्थों के लिए सर्वासाधारण को अंधा बना देना ही धर्म की रक्षा, प्रजातंत्र और जनवाद है।''?

राजनेता जनता के कल्याण की अतिशयोक्तिपूर्ण उक्तियों का बखान करते हैं, पर उनका असली चेहरा कुछ ओर ही होता है। जयदेव पूरी राजनेतओं की इसी मूल्यहीनता का प्रतिधित्व करता हुआ सामान्य व्यक्ति के लिए अलॉट हुई जमीन पैसे लेकर बेच देता है तो एक व्यक्ति प्रतिकार करता है। 'हमारे साथ

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

जुल्म हुआ है, जो बारह धुंआ जमीन अलाट हुई थी, वह भी छीन कर अपने जमाइयों को सौ–सौ, दो–दो सौ घुमा दे दी है। या तो जमीन दो, नहीं तो वहां जाड़े–भूख से मरने से यहां तुम्हारे सिर ही मरेंगे।'' परन्तु जयदेव पुरी उसके इस प्रतिकार पर उसे जेल भेज देता है। इसी प्रकार जयदेव पुरी उर्मिला के लिए कनक को धोखा देकर, अपने राजनीतिक ढोंग और छदम् चरित्र को पुष्ट करता है।

देश विभाजन की इस विभिषिका, इस त्रासदी ने सर्वाधिक प्रभावित किया– स्त्री को। प्राचीनकाल से ही कोई राजा मरता तो, स्त्री को या तो जौहर करना पड़ता या विरोधी राजा के सामने समर्पण करना पड़ता। विभाजन के समय जो स्त्रिया बिछड़ गई, उनके परिवार वालों ने उन्हें स्वीकार नहीं किया। सामाजिक अपवाद व लोकाचार के कारण वापस लौटी अनेक स्त्रियों को अपनाया नही गया। उपन्यास 'झूठा–सच' बंती और चिंती ऐसी ही युवतियां हैं। बंती अपने घर की चौखट पर सिर फोड़कर अपनी जान दे देती है। उनके ससुराल वाले उसे स्वीकारने को तैयार नहीं है क्योंकि इस बीच वह जाने कहां–कहां रही है और क्या –क्या किया है। समाज की इस संकीर्ण मानसिकता में न जाने कितनी स्त्रियां अपनी जीवन लीला समाप्त कर डालती है। समाज के दोनो पक्ष स्त्री और पुरूष जब समान समझे जाते हैं तो यह वैविधय सिर्फ नारी ही क्यों सहे। इस प्रकार यशपाल जी ने एक वैचारिक दृष्टिकोण का पाठक के मन में समावेशन किया है।

वस्तुतः विभाजन, उसकी पीड़ा, साम्प्रदायिकता की त्रासदी प्रमुख रूप से मध्यवर्गीय समाज को ही प्रभावित करती है। उच्च वर्ग तो अपने धन दौलत से अपने चारो ओर सुरक्षा का अभेद आवरण बना लेता है। मरने में हमेशा छोटे–मोटे फेरी वाले भिश्ती, मोची, दिहाड़ी पर काम करने वाले मजदूर या फिर दौलूमामा जैसे लोग ही होते हैं। 'झूठा सच' में यशपाल जी ने मध्यमवर्गीय समाज को प्रमुखता से वाणी प्रदान की। जयदेव पुरी उच्च शिक्षा प्राप्त करके भी बेरोजगार घूमता है। तारा के माध्यम से यशपाल जी ने मध्यमवर्गीय समाज के उस पात्र को प्रकाशित किया जो शिक्षा प्राप्ति को लेकर जुझारू रहता है।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

उपन्यास क आरम्भ में 'तारा' एक साधारण लड़की के रूप में पाठकों के सामने आती है। अपने परिवेश की विदूपताओं से लड़ने के लिए अपनी सारी सीमाओं के बीच हर मुमकिन कोशिश करती है। उसकी त्रासदी किन्हीं अर्थों में समूचे मध्यमवर्गीय समाज की त्रासदी है। राम ज्वाया, रामलुभाया, जयदेव पुरी, पंडित गिरधारी लाल, डाक्टर, प्राणनाथ व पंजाब के असंख्य परिवार मध्यवर्ग के विभिन्न स्तरों का प्रतिनिध्त्व करते हैं।

भारत–पाकिस्तान विभाजन की पुष्टि हो चुकी थी, फिर भी अपनी–अपनी मिट्टी से जुड़े व्यक्ति उससे अलगाव महसूस नहीं करत और विभाजन की इस प्रक्रिया को स्वीकारते नहीं हैं। विभाजन को वे मिथ्या या पागलपन करार देते हैं। काली पड़ोसी कहता है– ''ताया यह सब पालगपन दो दिन का है, जो भागकर आए हैं, वे भी चार दिन में लौट जाएंगे पाकिस्तान हुआ तो क्या और हिन्दुस्तान हुआ तो क्या, हम लोग तो लाहौरी हैं। डूंगी गली के पड़ोसी हैं। चल बैठ तू घर में। तेरी दुकान जल गई है तो और बन जाएगी। रब्ब का भरोसा कर।''

धर्म के नाम पर हुए विभाजन से आम जनसमुदाय जो अपने परिवेश, अपनी संस्कृति और स्थान से गहराई से जुड़ा हुआ है। उसका अन्तःकरण इस विभाजन की त्रासदी से आहत है। धर्म के आधार पर विभाजन पर काफिले की मोटर का ड्राइवर कहता है – 'रब्ब ने जिन्हें एक बनाया था, रब्ब के बंदों ने बहस ओर जुल्म से उसे दो कर दिया।'

यशपाल जी ने उपन्यास के अन्त में सकारात्मक दृष्टिकोण रखा है और जनता जनार्दन की शक्ति को सवांपरि माना है। सूद जी की सत्ररह हजार वोटों से हुई हार को दिखाकर बुद्धिजीवियों की सकारात्मकता को पुष्ट किया। जनता निर्जीव नहीं है। जनता सदा ही मूक नहीं रहती। देश का भविष्य नेताओं और मंत्रियों की मुट्ठी में नहीं है। देश जनता के हाथों में हैं। इस प्रकार यशपाल जी ने आशावाद और सकारात्मक का वैचारिक दृष्टिकोण पाठक के हृदय में समावेशित किया है।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

संदर्भ ग्रन्थ सूचिः–

1. यशपाल – मधुरेश, आधार प्रकाशन, पंचकुला, पृ. 193
2. यशपाल, 'झूठा सच'
3. वहीं, पृ. न. 197
4. 'झूठा सच', यशपाल
5. वहीं, पृ. न. 456
6. वहीं, पृ. न. 123
7. वहीं, पृ. न. 539
8. वहीं, पृ. न. 272
9. वहीं, पृ. न. 539
10. वहीं, पृ. न. 709

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018